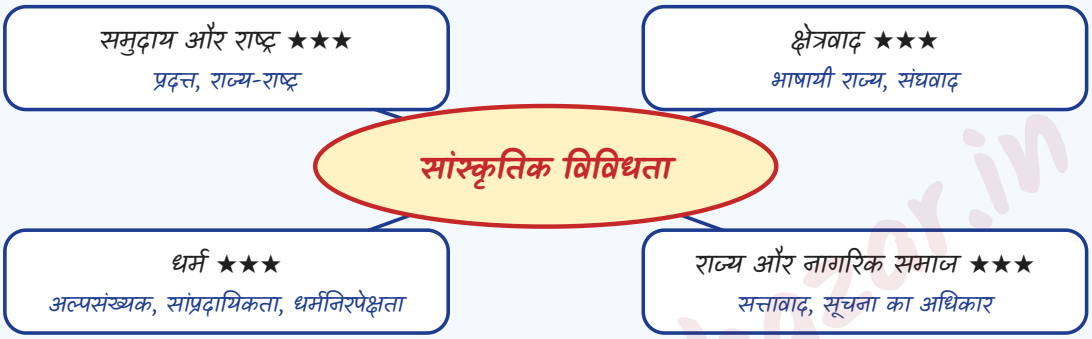
FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 1 of 13

अध्याय 5
सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ

सांस्कृतिक विविधता और वह चुनौती क्यों है · सामुदायिक पहचान (प्रदत्त, सार्वभौमिक) · राष्ट्र, राज्य और राष्ट्र-राज्य · आत्मसात्करण और एकीकरण · "राज्य-राष्ट्र" के रूप में भारत · क्षेत्रवाद और भाषायी राज्य · धर्म : अल्पसंख्यक अधिकार, सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता · राज्य और नागरिक समाज · सूचना का अधिकार

अध्याय-मानचित्र (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण)



पाठ्यक्रम और अंक-भार

यूनिट 6 : **10 अंक**। बार-बार पूछे गए विषय : विविधता चुनौती क्यों है, प्रदत्त सामुदायिक पहचान, सामुदायिक संघर्ष (दर्पण-प्रतिबिंब), राष्ट्र का वर्णन आसान पर परिभाषा कठिन, विविधता में एकता के प्रोत्साहन, क्षेत्रवाद, भाषायी राज्य और संस्थागत ढाँचा, अल्पसंख्यक (पारसी, सिख), समावेशी राष्ट्रवाद, सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता (पश्चिमी बनाम भारतीय; पक्ष और विपक्ष), सत्तावादी राज्य, नागरिक समाज और सूचना का अधिकार।

★ **परीक्षा-सुझाव:** "**विविधता**" **अंतरों** पर बल देती है, विषमताओं पर नहीं। भारत में भाषा, धर्म, संप्रदाय, प्रजाति या जाति से परिभाषित अनेक समुदाय हैं। एक राष्ट्र के भीतर उनके बीच प्रतिस्पर्धा या संघर्ष कठिन चुनौतियाँ पैदा कर सकता है।

एक नज़र में : प्रमुख वर्ष और आँकड़े (अध्याय की समय-रेखा)

वर्ष	घटना	वर्ष	घटना
1920 का दशक	कांग्रेस की इकाइयाँ भाषायी आधार पर पुनर्गठित	1971	भाषा के प्रश्न पर पाकिस्तान का विभाजन
1953	पोट्टी श्रीरामुलु की मृत्यु; आंध्र प्रदेश	1983	श्रीलंका में गृहयुद्ध का आरंभ
1956	राज्य पुनर्गठन आयोग (1 नवंबर)	2000	उत्तरांचल, झारखंड, छत्तीसगढ़
1956	श्रीलंका में केवल सिंहली राजभाषा	2005	सूचना का अधिकार अधिनियम (15 जून / 13 अक्तूबर)

प्रमुख शब्द : प्रदत्त — जन्म से मिली; **राष्ट्र** — अपना राज्य रखने वाला समुदाय; **राज्य-राष्ट्र** — एक राज्य में अनेक "राष्ट्र"; **क्षेत्रवाद**; **सांप्रदायिकता** — धर्म से जुड़ी आक्रामक राजनीतिक विचारधारा; **नागरिक समाज** — गैर-राज्य, गैर-बाज़ार सार्वजनिक क्षेत्र। भारत : 1,632 भाषाएँ व बोलियाँ, 22 अनुसूचित; 28 राज्य, 8 संघ राज्य क्षेत्र।

SAMPLE notesbazar.in

5.1 सांस्कृतिक विविधता चुनौती क्यों है ? ★★★

1. सांस्कृतिक पहचानें **बहुत शक्तिशाली** होती हैं — वे तीव्र भावनाएँ जगाती और बड़ी संख्या में लोगों को लामबंद करती हैं।
2. सांस्कृतिक भिन्नताओं के साथ कभी-कभी **आर्थिक और सामाजिक विषमताएँ** भी होती हैं।
3. एक समुदाय के प्रति हुए अन्याय को दूर करने के उपाय दूसरों के **विरोध को भड़का** सकते हैं।
4. जब **दुर्लभ संसाधन** — नदियों का जल, नौकरियाँ, सरकारी धन — बाँटने पड़ें तो स्थिति और बिगड़ती है।

5.2 सामुदायिक पहचान का महत्त्व ★★★

- हर किसी को एक **स्थिर पहचान** चाहिए (मैं कौन हूँ ? मैं कैसे भिन्न हूँ ?)। हम इसका उत्तर **समाजीकरण** द्वारा देते हैं — **महत्त्वपूर्ण अन्य लोगों** (माता-पिता, परिवार, नातेदार, समुदाय) के साथ निरंतर संवाद, मोल-भाव और यहाँ तक कि संघर्ष। समुदाय हमें **मातृभाषा** और सांस्कृतिक मूल्य देता है और हमारी आत्म-पहचान को सहारा देता है।
- सामुदायिक पहचान **जन्म और "संबद्धता"** पर आधारित होती है, अर्जित गुणों या उपलब्धि पर नहीं — हम क्या "**हैं**", न कि क्या "**बन गए**"। ऐसी पहचानें **प्रदत्त** होती हैं : जन्म से निर्धारित, बिना चुनाव के।
- विचित्र बात यह है कि जिन समुदायों की सदस्यता पूर्णतः संयोग से मिलती है, उनसे संबद्ध होने में लोग गहरी **सुरक्षा और संतोष** महसूस करते हैं — किसी पेशे या टीम के विपरीत जिसमें परीक्षा या कौशल चाहिए। सदस्यता **बिना पूर्व-शर्त के फिर भी पूर्ण** होती है, और उसे छोड़ना कठिन है : दूसरे फिर भी हमें उन्हीं चिह्नों से पहचानते हैं।
- चूँकि संबद्धता **संयोगवश, बिना शर्त और लगभग अपरिहार्य** है, हम भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं; फैलते दायरे (परिवार, नातेदारी, जाति, नृजातीयता, भाषा, क्षेत्र, धर्म) अर्थ देते हैं; अनुभूत ख़तरे भावनात्मक या हिंसक प्रतिक्रियाएँ भड़काते हैं।
- प्रदत्त पहचानें **सार्वभौमिक** भी हैं : हर किसी का मातृभूमि, मातृभाषा, परिवार, आस्था है, और उनके प्रति प्रतिबद्धता की संभावना भी।

सामुदायिक संघर्ष सुलझाना कठिन क्यों ★★★

प्रत्येक पक्ष दूसरे को **घृणित शत्रु** के रूप में देखता है; प्रत्येक अपने **गुणों** और दूसरे के **दुर्गुणों** को बढ़ा-चढ़ाकर कहता है; युद्ध में प्रत्येक मानता है कि ईश्वर और सत्य उसके पक्ष में हैं। वे एक-दूसरे के **मिलते-जुलते पर उलटे दर्पण-प्रतिबिंब** रच लेते हैं।

5.3 समुदाय, राष्ट्र और राष्ट्र-राज्य ★★★

- **राष्ट्र** एक बड़े पैमाने का समुदाय है — **समुदायों का समुदाय** — जिसके सदस्यों में एक ही राजनीतिक समूह का हिस्सा होने की साझा इच्छा होती है, जो प्रायः एक **राज्य** बनाने की आकांक्षा के रूप में व्यक्त होती है।
- **राज्य** : राजनीतिक-कानूनी संस्थाओं की अमूर्त इकाई जो एक भू-क्षेत्र और उसके लोगों पर नियंत्रण का दावा करती है। **मैक्स वेबर** : राज्य "वह निकाय है जो किसी विशेष भू-क्षेत्र में **वैध बल-प्रयोग के एकाधिकार** का सफलतापूर्वक दावा करता है"।

राष्ट्र का वर्णन आसान, परिभाषा कठिन ★★★

- हम साझे धर्म, भाषा, नृजातीयता, इतिहास या क्षेत्रीय संस्कृति पर आधारित राष्ट्रों का वर्णन कर सकते हैं।
- पर कोई भी विशेषता सब राष्ट्रों में साझा नहीं : हर कसौटी के **अपवाद** हैं। अनेक राष्ट्रों में एक भाषा, धर्म या नृजातीयता नहीं होती; अनेक भाषाएँ और धर्म कई राष्ट्रों में साझा हैं — फिर भी सब अंग्रेज़ी-भाषियों या सब बौद्धों का कोई एक राष्ट्र नहीं है।
- कोई भी समुदाय राष्ट्र बन सकता है, और किसी के बनने की गारंटी नहीं।
- सबसे निकट की विभेदक कसौटी **राज्य** है : राष्ट्र वह समुदाय है जो **अपना राज्य प्राप्त करने में सफल** रहा — इसीलिए "राष्ट्र-राज्य"।

राष्ट्र और राज्य का एक-से-एक बंधन **नया** है : सोवियत संघ में सौ से अधिक आंतरिक राष्ट्रीयताओं को मान्यता थी; **जर्मेका के लोग** जर्मेका के भीतर से अधिक बाहर रहते हैं; **दोहरी नागरिकता** यहूदी अमेरिकियों को इज़राइल और अमेरिका दोनों का नागरिक होने देती है। आज लोकतंत्र और राष्ट्रवाद राजनीतिक वैधता के मुख्य स्रोत हैं : राज्यों को **राष्ट्र की उतनी ही आवश्यकता** है जितनी राष्ट्रों को राज्यों की।

5.4 राज्य सांस्कृतिक विविधता से क्यों डरते हैं ★★★

राज्यों को डर था कि भिन्नताओं को मान्यता देने से **विखंडन** होगा; पहचान की राजनीति एकता के लिए ख़तरा लगी; इसलिए अधिकांश राज्यों ने विविध पहचानों को **दबाया या उपेक्षित** किया (यू.एन.डी.पी. मानव विकास रिपोर्ट 2004)।

आत्मसात्करण	एकीकरण
सभी नागरिकों को **एक-सी सांस्कृतिक मूल्य-व्यवस्था** अपनाने के लिए मनाना, प्रोत्साहित करना या बाध्य करना, प्रायः **प्रभावी समूह** की; अन्य को अपनी छोड़नी पड़ती है; प्रायः खुला दमन	सार्वजनिक संस्कृति **साझे राष्ट्रीय ढाँचे** तक सीमित; "गैर-राष्ट्रीय" संस्कृतियाँ **निजी क्षेत्र** में धकेली जाती हैं; ख़तरा कि प्रभावी समूह की संस्कृति को "राष्ट्रीय" मान लिया जाए

प्रयुक्त रणनीतियाँ : जहाँ प्रभावी समूह बहुसंख्यक है वहाँ सत्ता का केंद्रीकरण; प्रभावी समूह की परंपराओं पर आधारित एक कानूनी व्यवस्था; उसकी भाषा को एकमात्र राजभाषा बनाना; राज्य के मीडिया और स्कूलों से उसकी संस्कृति का प्रचार; उसके नायकों का गुणगान करने वाले राजकीय प्रतीक, छुट्टियाँ और सड़कों के नाम; अल्पसंख्यकों और मूल निवासियों की भूमि, वनों और मत्स्य-क्षेत्रों को "राष्ट्रीय संसाधन" बताकर हथियाना।

चूँकि कोई भी सामुदायिक पहचान राष्ट्र का आधार बन सकती है, राज्य उन्हें **प्रतिद्वंद्वी** मानते हैं और एक समरूप पहचान को वरीयता देते हैं। परंतु दमन अल्पसंख्यकों को **अलग-थलग** कर देता है और उनकी पहचान को **प्रबल** कर सकता है। विविधता को अनुमति देना व्यावहारिक और सैद्धांतिक, दोनों दृष्टि से अच्छी नीति है।

5.5 भारत : एक "राज्य-राष्ट्र" ★★★

- सबसे विविध देशों में से एक : लगभग **1.21 अरब** लोग (2011), लगभग **1,632 भाषाएँ और बोलियाँ**, **8वीं अनुसूची** में **22**; हिंदू लगभग **80%** (स्वयं बहुलतावादी), मुसलमान **14.2%**, ईसाई 2.3%, सिख 1.7%, बौद्ध 0.7%, जैन 0.4%।
- भारत **दोनों** प्रतिमानों में फिट नहीं बैठता : उसने आत्मसात्करण को अस्वीकार किया (यद्यपि प्रभावी समुदाय में कुछ इसकी माँग करते हैं), और वह एकीकरणवादी भी नहीं — धर्म और भाषा **मान्य** हैं, सार्वजनिक जीवन से निष्कासित नहीं; अल्पसंख्यकों की बहुत सुदृढ़ सुरक्षा। समस्याएँ सिद्धांतों में नहीं, **क्रियान्वयन** में हैं।
- **राज्य-राष्ट्र** (बॉक्स 6.2) : विभिन्न "राष्ट्र" — नृजातीय, धार्मिक, भाषायी, मूल निवासी — एक राज्य में सह-अस्तित्व रखते हैं। सांस्कृतिक अपवर्जन समाप्त करने और **बहुविध एवं पूरक पहचानें** बनाने के स्पष्ट प्रयास; नागरिक देश और संस्कृति दोनों से तादात्म्य रखते हैं, **साझी संस्थाओं पर भरोसा** करते हैं और **लोकतंत्र का समर्थन** करते हैं — "हम" की भावना। विविधता के बावजूद भारत के नागरिक देश और लोकतंत्र के प्रति गहराई से प्रतिबद्ध हैं; आज की चुनौती **एकल हिंदू पहचान** थोपने की कोशिश करने वाले समूह और सांप्रदायिक हिंसा हैं।

5.6 भारतीय संदर्भ में क्षेत्रवाद ★★★

- **क्षेत्रवाद** भारत की **भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों** की विविधता में जड़ें रखता है, इन पहचान-चिह्नों के **भौगोलिक संकेंद्रण** से प्रोत्साहित और **क्षेत्रीय वंचन की भावना** से पोषित है। **संघवाद** क्षेत्रीय भावनाओं को समायोजित करता है।
- स्वतंत्रता के बाद भारत ने बड़े बहुभाषी ब्रिटिश प्रांत (**प्रेसीडेंसियाँ** — मद्रास, बंबई, कलकत्ता) बनाए रखे; जन-आंदोलनों ने उन्हें नृजातीय-भाषायी राज्यों में पुनर्गठित करने को बाध्य किया।

बॉक्स 6.3 : भाषायी राज्यों ने एकता सुदृढ़ की ★★★

- **1920 के दशक** में कांग्रेस ने अपनी इकाइयाँ भाषायी आधार पर पुनर्गठित कीं; गांधी ने भाषायी प्रांतों का वचन दिया।
- विभाजन के बाद नेहरू, पटेल और राजाजी और विभाजनों के भय से हिचके; साधारण कांग्रेसजन तथा मराठी, कन्नड़ और विशेषतः **तेलुगु** भाषियों ने आंदोलन किया।
- सात सप्ताह के अनशन के बाद अक्तूबर **1953** में **पोट्टी श्रीरामुलु** की मृत्यु हुई; विरोध-प्रदर्शनों से **आंध्र प्रदेश** और **राज्य पुनर्गठन आयोग** बना; उसकी रिपोर्ट **1 नवंबर 1956** को लागू हुई।
- भारत को बाँटने के बजाय भाषायी राज्यों ने **एकता सुदृढ़** की : कोई कन्नड़िगा और भारतीय, तमिल और भारतीय हो सकता है। तुलना कीजिए **श्रीलंका** से (1956 में केवल सिंहली → 1983 से गृहयुद्ध : "एक भाषा,

दो राष्ट्र; दो भाषाएँ, एक राष्ट्र") और **पाकिस्तान** से (1971 में बांग्ला के प्रश्न पर विभाजित)। अन्यथा भारत में "एक भाषा, चौदह या पंद्रह राष्ट्र" हो सकते थे (रामचंद्र गुहा)।

- क्षेत्रीय और जनजातीय पहचान के साथ भाषा — **धर्म नहीं** — नृजातीय-राष्ट्रीय पहचान का सबसे शक्तिशाली आधार रही है। परंतु **2000** में छत्तीसगढ़, उत्तरांचल और झारखंड जनजातीय नृजातीयता, भाषा, क्षेत्रीय वंचन और पारिस्थितिकी के आधार पर बने। भारत में **28 राज्य और 8 संघ राज्य क्षेत्र** हैं।

क्षेत्रीय भावना के लिए संस्थागत ढाँचा ★★★

क्षेत्रीय भावना का सम्मान केवल राज्य बनाना नहीं है; इसके लिए एक संस्थागत ढाँचा चाहिए जो उनकी व्यवहार्यता और स्वायत्तता सुनिश्चित करे : राज्यों और केंद्र की शक्तियाँ परिभाषित करने वाले **संवैधानिक प्रावधान (संघ, राज्य और समवर्ती सूचियाँ)**; राज्य विधायिकाएँ **राज्यसभा** चुनती हैं; हर पाँच वर्ष में **वित्त आयोग** कर-राजस्व बाँटता है; राज्य योजनाएँ (2017 तक); **जी.एस.टी. परिषद** में राज्य शामिल हैं।

5.7 धर्म से संबंधित मुद्दे ★★

विविधता का सबसे विवादास्पद पहलू : दो समूह — **धर्मनिरपेक्षता–सांप्रदायिकता** (धर्म और धार्मिक राजनीतिक समूहों के साथ राज्य का संबंध) और **अल्पसंख्यक–बहुसंख्यक** (संख्या या शक्ति में असमान समुदायों के साथ राज्य का व्यवहार)।

समावेशी राष्ट्रवाद और अल्पसंख्यक अधिकार ★★★

- भारतीय राष्ट्रवाद की प्रमुख धारा **समावेशी** (विविधता और बहुलता को मान्यता) और **लोकतांत्रिक** (भेदभाव और बहिष्कार को समाप्त कर न्यायपूर्ण, समतामूलक समाज बनाने का प्रयास) थी। "जनता" को धर्म, नृजातीयता, प्रजाति या जाति से परिभाषित नहीं किया गया; मानवतावाद ने राष्ट्रवादियों को प्रभावित किया; **गांधी और टैगोर** ने संकीर्ण राष्ट्रवाद की आलोचना की (टैगोर : पश्चिमी राष्ट्रवाद अर्धसत्यों द्वारा घृणा और अन्य प्रजातियों के प्रति तिरस्कार सिखाता है)।
- चूँकि प्रभावी समूह अपनी संस्कृति को राष्ट्र के बराबर मान लेता है, सभी समूहों, विशेषतः अल्पसंख्यकों, की रक्षा के लिए **विशेष संवैधानिक प्रावधान** चाहिए।

अल्पसंख्यक कौन ? ★★★

- यह संख्यात्मक विचार से अधिक है — इसमें **सापेक्ष हानि** निहित है; विशेषाधिकार-प्राप्त समूह (अति धनी) अल्पसंख्यक नहीं कहे जाते (या "विशेषाधिकार-प्राप्त अल्पसंख्यक")।
- सदस्य एक **सामूहिकता** बनाते हैं — प्रबल **समूह-एकजुटता**, साथ होने और संबद्धता का भाव, जो पूर्वाग्रह और भेदभाव से तीव्र होता है (गिडेन्स)। बाएँ हाथ से काम करने वाले या 29 फ़रवरी को जन्मे लोग सांख्यिकीय अल्पसंख्यक हैं, समाजशास्त्रीय नहीं।
- विसंगतियाँ : **पारसी या सिख** आर्थिक रूप से संपन्न हो सकते हैं पर हिंदू बहुसंख्यकों के सामने छोटी संख्या के कारण सांस्कृतिक रूप से वंचित। बहुसंख्यकों के जनसांख्यिकीय प्रभुत्व के कारण धार्मिक और सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को सुरक्षा चाहिए।
- **बॉक्स 6.5 (2011) :** हिंदू लगभग 96.6 करोड़ (80%), सभी अल्पसंख्यकों के कुल का चार गुना; मुसलमान 17.2 करोड़ (14.2%), जम्मू-कश्मीर में बहुसंख्यक; ईसाई 2.78 करोड़ (2.3%), नागालैंड (88%), मिज़ोरम (87%), मेघालय (74%) में बहुसंख्यक; सिख 2.1 करोड़ (1.7%), पंजाब में बहुसंख्यक (58%); बौद्ध 0.7% (सिक्किम 27%); जैन 0.4%।

अल्पसंख्यकों पर आंबेडकर (बॉक्स 6.6) ★★

"अल्पसंख्यक एक विस्फोटक शक्ति हैं जो यदि फूट पड़ें तो राज्य के पूरे ताने-बाने को उड़ा सकते हैं।" आयरलैंड के प्रोटेस्टेंटों ("तुम्हारे रक्षा-कवच जहन्नुम में जाएँ, हम तुम्हारे शासन में रहना नहीं चाहते") के विपरीत, भारत के अल्पसंख्यक "अपना अस्तित्व बहुसंख्यकों के हाथों में रखने को सहमत हुए हैं"।

अनुच्छेद 29 और 30 : किसी विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति वाला कोई भी वर्ग उसे **संरक्षित** कर सकता है; धर्म, प्रजाति, जाति या भाषा के आधार पर राज्य-वित्तपोषित संस्थाओं में प्रवेश से इनकार नहीं; अल्पसंख्यक (धार्मिक या भाषायी) **शैक्षिक संस्थाएँ स्थापित और संचालित** कर सकते हैं; अनुदान में कोई भेदभाव नहीं। समूह-अधिकारों की अस्वीकृति से **बांग्लादेश** और **श्रीलंका** का संघर्ष हुआ। कोई राष्ट्र-राज्य पूर्णतः समरूप नहीं (आइसलैंड, स्वीडन, दक्षिण कोरिया भी नहीं)।

5.8 सांप्रदायिकता ★★★

- भारतीय बोलचाल में : **धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक अंधराष्ट्रवाद**; अंधराष्ट्रवाद अपने समूह को ही एकमात्र योग्य, दूसरों को हीन और विरोधी मानता है। अतः सांप्रदायिकता **धर्म से जुड़ी आक्रामक राजनीतिक विचारधारा** है — दक्षिण एशियाई अर्थ, जो अत्यंत आवेशित है (अंग्रेज़ी का "कम्युनल" तटस्थ है)।
- यह **राजनीति के बारे में है, धर्म के नहीं** : सांप्रदायिक व्यक्ति धर्मपरायण हो भी सकता है और नहीं भी, और धर्मपरायण लोग सांप्रदायिक हो भी सकते हैं और नहीं भी; परंतु सभी सांप्रदायिक **धर्म पर आधारित राजनीतिक पहचान** में विश्वास करते हैं और जो इसे साझा न करें उनकी निंदा या उन पर आक्रमण करते हैं।
- यह दावा करती है कि **धार्मिक पहचान सब कुछ से ऊपर है** — वर्ग, व्यवसाय, जाति, राजनीति; सभी हिंदू (या मुसलमान, सिख) एक जैसे हैं — बड़े विविध समूहों को **एकल और समरूप** रचकर।
- तनाव और दंगों का बार-बार आने वाला स्रोत — अंशतः औपनिवेशिक **फूट डालो और राज करो** से, पर उपनिवेशवाद ने संघर्ष गढ़े नहीं और स्वतंत्रता के बाद के दंगों के लिए उसे दोष नहीं दिया जा सकता।
- भारत में **धार्मिक बहुलतावाद और समन्वयवाद** की भी लंबी परंपरा है — भक्ति और सूफ़ी काव्य; **कबीर** : "न मंदिर में, न मस्जिद में ... मैं तो तेरे साथ हूँ।"

5.9 धर्मनिरपेक्षता ★★★

पश्चिमी अर्थ	भारतीय अर्थ
चर्च और राज्य का पृथक्करण; **लौकिकीकरण** (धर्मनिरपेक्षीकरण) का भाग — सार्वजनिक जीवन से धर्म का क्रमिक पीछे हटना, अनिवार्य दायित्व से स्वैच्छिक निजी आचरण बनना; आधुनिकता, विज्ञान और तर्कसंगतता से जुड़ा	पश्चिमी अर्थ को समेटता है, और **सांप्रदायिक के विपरीत** भी : धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति या राज्य **किसी धर्म का पक्ष नहीं लेता**; धर्म का विरोधी नहीं; **सभी धर्मों का समान आदर** (सर्व धर्म संभाव) — जैसे सभी धर्मों के त्योहारों पर सार्वजनिक अवकाश

अल्पसंख्यक सुरक्षा से तनाव : अल्पसंख्यकों को विशेष विचार चाहिए क्योंकि सामान्य राजनीति उन्हें हानि पहुँचाती है। **विपक्ष में :** आलोचक इसे पक्षपात या "**तुष्टीकरण**" कहते हैं — वोटों के बदले अल्पसंख्यकों का पक्ष लेने का बहाना। **पक्ष में :** समर्थक कहते हैं कि ऐसी सुरक्षा के बिना धर्मनिरपेक्षता अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों के मूल्य थोपने का बहाना बन जाती है।

5.10 राज्य और नागरिक समाज ★★★

- विविधता के प्रबंधन में राज्य की भूमिका निर्णायक है। यद्यपि वह राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने का दावा करता है, वह **जनता से स्वतंत्र** हो सकता है; यदि राज्य-संरचना (विधायिका, नौकरशाही, न्यायपालिका, सशस्त्र बल, पुलिस) जनता से अलग-थलग हो, तो वह **सत्तावादी** बन सकती है।
- **सत्तावादी राज्य** — लोकतांत्रिक का विपरीत : लोगों की **कोई आवाज़ नहीं**; सत्ताधारी **किसी के प्रति जवाबदेह नहीं**; प्रायः **नागरिक स्वतंत्रताओं** — भाषण, प्रेस, राजनीतिक गतिविधि की स्वतंत्रता, सत्ता के दुरुपयोग से संरक्षण, विधि की उचित प्रक्रिया — को सीमित या समाप्त कर देता है। (भारत में 1975–77 का आपातकाल इसका संक्षिप्त अनुभव था।)
- राज्य **भ्रष्टाचार, अक्षमता या संसाधनों की कमी** के कारण भी प्रतिक्रिया देने में विफल हो सकते हैं। इसलिए **गैर-राज्य कर्ता** महत्त्वपूर्ण हैं : वे राज्य पर नज़र रखते हैं, अन्यायों का विरोध करते हैं, उसके प्रयासों के पूरक बनते हैं।

नागरिक समाज क्या है ? ★★★

- निजी परिवार से **परे** पर **राज्य और बाज़ार, दोनों से बाहर** का व्यापक क्षेत्र — सार्वजनिक क्षेत्र का गैर-राज्य, गैर-बाज़ार भाग जहाँ व्यक्ति स्वेच्छा से संस्थाएँ और संगठन बनाते हैं।
- **सक्रिय नागरिकता** का क्षेत्र : सामाजिक मुद्दे उठाना, राज्य को प्रभावित करना या उससे माँग करना, सामूहिक हितों का अनुसरण।
- इसमें राजनीतिक दल, मीडिया, श्रमिक संघ, **गैर-सरकारी संगठन**, धार्मिक संगठन और अन्य स्वैच्छिक निकाय शामिल हैं। कसौटियाँ : **राज्य-नियंत्रित नहीं** और **विशुद्ध वाणिज्यिक नहीं**।
- मुद्दे : जनजातीय भूमि-अधिकार, नगरीय विकेंद्रीकरण, बलात्कार और स्त्रियों के विरुद्ध हिंसा के विरुद्ध अभियान, विस्थापितों का पुनर्वास, यंत्रीकृत मत्स्य-पालन के विरुद्ध मछुआरे, फेरीवाले और फुटपाथवासी, आवास अधिकार,

शिक्षा सुधार, दलितों के लिए भूमि; राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के साथ पैरवी। **नागरिक स्वतंत्रता संगठन** राज्य पर नज़र रखते हैं; मीडिया, विशेषतः दृश्य और इलेक्ट्रॉनिक, बढ़ते हुए सक्रिय है।

5.11 सूचना के अधिकार का अभियान ★★★

- इसकी शुरुआत **ग्रामीण राजस्थान** में गाँव के विकास पर खर्च हुए सरकारी धन की जानकारी के लिए आंदोलन के रूप में हुई; यह **देशव्यापी अभियान** बन गया।
- **नौकरशाही के प्रतिरोध** के बावजूद सरकार को नागरिक के सूचना के अधिकार को स्वीकार करने वाला कानून पारित करना पड़ा।

बॉक्स 6.9 : सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (अधिनियम सं. 22/2005) ★★★

- संसद द्वारा **15 जून 2005** को पारित; **13 अक्तूबर 2005** से लागू; **शासकीय गुप्त बात अधिनियम 1923** पर प्रभावी।
- कोई भी व्यक्ति किसी "**लोक प्राधिकारी**" से जानकारी माँग सकता है, जिसे शीघ्र या **तीस दिन** में उत्तर देना होगा।
- लोक प्राधिकारियों को **अभिलेखों का कंप्यूटरीकरण** और सूचना को स्वयं प्रकाशित करना होगा, ताकि नागरिकों को न्यूनतम औपचारिक अनुरोध करने पड़ें।
- नागरिक जानकारी माँग सकते हैं, प्रतियाँ ले सकते हैं, दस्तावेज़ों, कार्यों और अभिलेखों का निरीक्षण कर सकते हैं, सामग्री के प्रमाणित नमूने ले सकते हैं, और जानकारी प्रिंट-आउट या इलेक्ट्रॉनिक रूप में पा सकते हैं।

सूचना का अधिकार दिखाता है कि नागरिक समाज राज्य को राष्ट्र और उसकी जनता के प्रति **जवाबदेह** कैसे बनाता है।

★ **परीक्षा-सुझाव: उत्तर-सुझाव :** "विविधता में एकता" के प्रश्नों में संस्थागत उपाय बताइए : भाषायी राज्य, संघीय सूचियाँ, राज्यसभा, वित्त आयोग, अनुच्छेद 29–30, धर्मनिरपेक्ष राज्य, आरक्षण — और बहुविध, पूरक पहचानों का विचार।

शब्द	एक पंक्ति में अर्थ
प्रदत्त	जन्म से मिली, चुनी हुई नहीं
राष्ट्र	अपना राज्य रखने वाला समुदाय
राज्य-राष्ट्र	एक राज्य में अनेक "राष्ट्र"
क्षेत्रवाद	किसी क्षेत्र की पहचान, भाषा, संस्कृति, वंचन से
सांप्रदायिकता	धर्म से जुड़ी आक्रामक राजनीतिक विचारधारा
नागरिक समाज	गैर-राज्य, गैर-बाज़ार सार्वजनिक क्षेत्र

NCERT के प्रश्न, हल सहित ★★★

1. सांस्कृतिक विविधता क्या है ? भारत बहुत विविध क्यों है ? 3

उत्तर। सांस्कृतिक विविधता का अर्थ है भाषा, धर्म, संप्रदाय, प्रजाति या जाति से परिभाषित अनेक भिन्न समुदायों का साथ रहना। भारत में लगभग 1.2। अरब लोग, लगभग 1,632 भाषाएँ और बोलियाँ (8वीं अनुसूची में 22), हिंदू (80%, स्वयं बहुलतावादी), मुसलमान (14.2%), ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन, अनेक जातियाँ और जनजातियाँ हैं।

2. सामुदायिक पहचान क्या है और यह कैसे बनती है ? 3

उत्तर। जन्म और संबद्धता पर आधारित (प्रदत्त) पहचान, उपलब्धि पर नहीं। यह समाजीकरण से बनती है — महत्त्वपूर्ण अन्य लोगों (माता-पिता, परिवार, नातेदार, समुदाय) के साथ संवाद, मोल-भाव और संघर्ष, जो भाषा, मूल्य और आत्म-पहचान देते हैं।

SAMPLE notesbazar.in

3. राष्ट्र को परिभाषित करना कठिन क्यों है ? राष्ट्र और राज्य कैसे संबंधित हैं ? 4

उत्तर। हर कसौटी (भाषा, धर्म, नृजातीयता) के अपवाद हैं; अनेक राष्ट्रों में ये नहीं हैं और ये अनेक राष्ट्रों में साझा हैं। राष्ट्र को सर्वोत्तम रूप से ऐसे समुदाय के रूप में देखा जा सकता है जिसका अपना राज्य हो। आज राज्यों को यह दावा करना पड़ता है कि वे किसी राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि राष्ट्रवाद और लोकतंत्र वैधता देते हैं; यह बंधन नया है (सोवियत संघ, विदेश में जमैका के लोग, दोहरी नागरिकता)।

4. राज्य सांस्कृतिक विविधता से शंकित क्यों हैं ? 3

उत्तर। कोई भी सामुदायिक पहचान प्रतिद्वंद्वी राष्ट्र का आधार बन सकती है; राज्य विखंडन से डरते हैं और समायोजन को राजनीतिक रूप से कठिन पाते हैं; इसलिए एकल पहचान थोपने वाली आत्मसात्करण या एकीकरण की नीतियाँ अपनाई जाती हैं।

5. क्षेत्रवाद क्या है ? यह किन कारकों पर आधारित है ? 3

उत्तर। किसी क्षेत्रीय पहचान से लगाव और उस पर बल, जो भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों की विविधता, इन चिह्नों के भौगोलिक संकेंद्रण और क्षेत्रीय वंचन की भावना में निहित है।

6. क्या भाषायी पुनर्गठन से भारत को लाभ हुआ या हानि ? 4

उत्तर। लाभ हुआ है : पोट्टी श्रीरामुलु की मृत्यु (1953) और राज्य पुनर्गठन आयोग (1956) के बाद भाषायी राज्यों ने लोगों को भारतीय होने के अनुकूल एक सुरक्षित क्षेत्रीय पहचान दी; विवाद सँभाले जा सकते हैं। श्रीलंका के गृहयुद्ध और भाषा पर पाकिस्तान के विभाजन से तुलना कीजिए। इसने संभावित "चौदह राष्ट्रों" को एक बना दिया।

7. अल्पसंख्यक क्या है ? अल्पसंख्यकों को सुरक्षा की आवश्यकता क्यों है ? 4

उत्तर। अपेक्षाकृत छोटा, वंचित समूह जिसमें एकजुटता और संबद्धता का भाव हो। उन्हें सुरक्षा चाहिए क्योंकि बहुसंख्यकों का जनसांख्यिकीय प्रभुत्व अपनी संस्कृति और मूल्य थोप सकता है; संपन्न अल्पसंख्यक (पारसी, सिख) भी सांस्कृतिक रूप से वंचित हो सकते हैं। इसीलिए अनुच्छेद 29–30।

8. सांप्रदायिकता क्या है ? 3

उत्तर। धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक अंधराष्ट्रवाद — एक राजनीतिक विचारधारा जो धर्म को सर्वोपरि पहचान मानती है, बड़े समूहों को समरूप बनाती है और अन्य पहचान वालों पर आक्रमण करती है; यह राजनीति के बारे में है, आस्था के नहीं।

9. भारत में धर्मनिरपेक्षता के अर्थ। 3

उत्तर। पश्चिमी : धर्म और राज्य का पृथक्करण, सार्वजनिक जीवन से धर्म का पीछे हटना। भारतीय : सांप्रदायिक के विपरीत भी — किसी धर्म का पक्ष न लेना; सभी धर्मों का समान आदर (सभी त्योहारों पर अवकाश); अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के साथ।

10. आज नागरिक समाज संगठनों की प्रासंगिकता। 4

उत्तर। वे राज्य पर नज़र रखते हैं, सत्तावाद को रोकते हैं, अन्याय का विरोध करते हैं और राज्य के प्रयासों के पूरक बनते हैं — जनजातीय भूमि-अधिकार, स्त्रियों की सुरक्षा, विस्थापितों का पुनर्वास, आवास, शिक्षा; नागरिक स्वतंत्रता समूह और मीडिया राज्य को कानून के दायरे में रखते हैं; सूचना के अधिकार के अभियान ने राज्य को जवाबदेह बनाया।

CBSE बोर्ड के प्रश्न 2024–2026, पूर्ण हल सहित ★★★

2024, 2025 और 2026 के CBSE बोर्ड प्रश्न-पत्रों (समाजशास्त्र 039, प्रश्न-पत्र कोड 62) से इस अध्याय का प्रत्येक प्रश्न, अंकन-योजना और NCERT पर आधारित पूर्ण उत्तरों सहित। जहाँ बोर्ड ने एक से अधिक विकल्प स्वीकार किए, वहाँ यह उल्लेख किया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक)

CBSE 2025 · 62/1 अनुच्छेद : "सामाजीकरण प्रक्रिया काफ़ी विस्तृत एवं लंबी होती है जिसमें कुछ विशेष लोगों के साथ (जो हमारे जीवन में प्रत्यक्ष रूप से शामिल रहते हैं) लगातार संवाद, वार्तालाप और कभी-कभी संघर्ष भी होता रहता है जैसे कि हमारे माता-पिता, परिवार, नातेदार समूह एवं हमारा समुदाय। हमारा समुदाय हमें भाषा (मातृभाषा) और सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करता है जिनके माध्यम से हम विश्व को समझते हैं। यह हमारी स्वयं की पहचान को भी सहारा देता है।" निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ग़लत है ? (A) किसी समुदाय में जन्म लेने के लिए हमें कुछ करना नहीं होता। (B) किसी परिवार में जन्म लेने पर हमारा कोई वश नहीं है। (C) किसी देश में जन्म लेने पर हमारा कोई वश नहीं है। (D) इस प्रकार की पहचानें अर्जित होती हैं।

> **उत्तर। (D)** ग़लत है। सामुदायिक पहचानें **प्रदत्त** होती हैं — जन्म से मिलती हैं, उपलब्धि या चुनाव से अर्जित नहीं। (A), (B) और (C) प्रदत्त होने का सही वर्णन करते हैं।

CBSE 2025 · 62/1 सामुदायिक विवादों को निपटाना कठिन होता है क्योंकि : (I) विवाद का प्रत्येक पक्ष सामने वाले पक्ष को शत्रु मानते हुए घृणा की दृष्टि से देखता है। (II) उसमें अपने पक्ष के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर कहने की प्रवृत्ति होती है। (III) उसमें अपने सामने वाले पक्ष के दुर्गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर न कहने की प्रवृत्ति होती है। (IV) ऐसे विवादों में, यह देखना बहुत कठिन होता है कि जैसा हम दूसरों के बारे में सोचते हैं, दूसरे भी तो हमारे बारे में वैसा ही सोच रहे हैं। उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं ?
विकल्प : (A) (I), (III) और (IV) (B) (I), (II) और (III) (C) (I), (II) और (IV) (D) (II), (III) और (IV)

> **उत्तर। (C) (I), (II) और (IV)।** सामुदायिक संघर्षों में प्रत्येक पक्ष दूसरे को घृणित शत्रु मानता है, अपने गुणों **और दूसरे पक्ष के दुर्गुणों** को बढ़ा-चढ़ाकर कहता है (इसलिए III. ग़लत है), और दोनों पक्ष एक-दूसरे के मिलते-जुलते पर उलटे दर्पण-प्रतिबिंब रच लेते हैं।

CBSE 2026 · 62/1 निम्नलिखित में से कौन-सी प्रतिसंवेदी नीतियाँ विविधता में एकता का निर्माण करने में सहयोगी हैं ? (A) नागरिक अपने देश तथा अपनी अन्य सांस्कृतिक पहचानों के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकते हैं। (B) नागरिक साझी संस्थाओं में विश्वास निर्मित नहीं कर सकते हैं। (C) नागरिक लोकतांत्रिक राजनीति में भाग लेते और उसका समर्थन नहीं करते। (D) विविध समूहों के सांस्कृतिक अपवर्जन (बहिष्कार) को खत्म करने और बहुविध तथा पूरक पहचानों का निर्माण करने के लिए स्पष्ट प्रयत्नों की आवश्यकता नहीं होती है।

> **उत्तर। (A)** जब नागरिकों को राष्ट्र और अपनी सांस्कृतिक पहचान, दोनों से तादात्म्य स्थापित करने के लिए संस्थागत और राजनीतिक स्थान मिलता है, तो वे साझी संस्थाओं में विश्वास बनाते हैं और लोकतांत्रिक राजनीति में भाग लेते हैं — यही विविधता में एकता का आधार है। (B), (C) और (D) इसके विपरीत कहते हैं।

CBSE 2026 · 62/1 एक सत्तावादी राज्य, एक लोकतंत्रात्मक राज्य का विपरीत होता है क्योंकि : (A) सत्तावादी राज्य में लोगों की आवाज़ नहीं सुनी जाती। (B) जिनके पास शक्ति होती है वे सबके प्रति उत्तरदायी होते हैं। (C) राज्य लोगों की आवश्यकताओं पर अच्छी तरह से प्रतिक्रिया करता है। (D) सत्तावादी राज्य नागरिक स्वतंत्रताओं को अक्सर सीमित या समाप्त नहीं करते।

> **उत्तर। (A)** सत्तावादी राज्य में लोगों की कोई आवाज़ नहीं होती; सत्ताधारी किसी के प्रति जवाबदेह नहीं होते; वह प्रायः नागरिक स्वतंत्रताओं (भाषण, प्रेस, राजनीतिक गतिविधि की स्वतंत्रता, सत्ता के दुरुपयोग से संरक्षण) को सीमित या समाप्त कर देता है। आपातकाल (1975–77) ने भारतीयों को सत्तावादी शासन का संक्षिप्त अनुभव दिया।

CBSE 2026 · 62/1 **अभिकथन (A) :** संवैधानिक प्रावधान राज्यों और केंद्र की शक्तियों को परिभाषित करते हैं। **कारण (R) :** क्षेत्रीय भावनाओं को आदर देना मात्र ही राज्य निर्माण के लिए काफी नहीं है, बल्कि इसके लिए एक ऐसा संस्थागत ढाँचा होना भी ज़रूरी है। **विकल्प :** (A) अभिकथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है। (B) अभिकथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है। (C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) ग़लत है। (D) अभिकथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है। 1

> **उत्तर। (A)** दोनों सत्य हैं और R, A की व्याख्या करता है। क्षेत्रवाद को समायोजित करने के लिए ऐसा संस्थागत ढाँचा चाहिए जो राज्यों की व्यवहार्यता और स्वायत्तता सुनिश्चित करे; इसलिए संविधान केंद्र और राज्यों की शक्तियाँ परिभाषित करता है (संघ, राज्य और समवर्ती सूचियाँ), राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है, और वित्त आयोग राजस्व बाँटते हैं।

CBSE 2024 · 62/1 **अभिकथन (A) :** विविधता शब्द असमानताओं के बजाय अंतरों पर बल देता है। **कारण (R) :** सांस्कृतिक विविधता कठोर चुनौतियाँ प्रस्तुत कर सकती है। **विकल्प :** (A) अभिकथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है। (B) अभिकथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है। (C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) ग़लत है। (D) अभिकथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है। 1

> **उत्तर। (B)** दोनों सत्य हैं पर R, A की व्याख्या नहीं करता। "विविधता" विषमताओं के बजाय (भाषा, धर्म, क्षेत्र के) अंतरों को दर्शाती है; अलग से, सांस्कृतिक विविधता कठिन चुनौतियाँ प्रस्तुत कर सकती है क्योंकि पहचानें भावनाएँ भड़काती हैं और संसाधन बाँटने पड़ते हैं।

CBSE 2024 · 62/1 **अभिकथन (A) :** धार्मिक और राजनीतिक सत्ता के पृथक्करण ने पश्चिम के सामाजिक इतिहास में एक बड़ा मोड़ ला दिया। **कारण (R) :** यह पृथक्करण धर्मनिरपेक्षीकरण या जनजीवन से धर्म के उत्तरोत्तर पीछे हट जाने की प्रक्रिया से संबंधित था, क्योंकि अब धर्म को एक अनिवार्य दायित्व की बजाय स्वैच्छिक व्यक्तिगत व्यवहार के रूप में बदल दिया गया था। **विकल्प :** (A) अभिकथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है। (B) अभिकथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है। (C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) ग़लत है। (D) अभिकथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है। 1

> **उत्तर। (A)** दोनों सत्य हैं और R, A की व्याख्या करता है। पश्चिम में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ चर्च और राज्य का पृथक्करण है; यह लौकिकीकरण (धर्मनिरपेक्षीकरण) के साथ चला — सार्वजनिक जीवन से धर्म का पीछे हटना, जिससे वह स्वैच्छिक निजी आचरण बन गया।

लघु उत्तरीय प्रश्न (2 अंक)

CBSE 2025 · 62/1 (क) "सांस्कृतिक विविधता कठोर चुनौतियों को प्रस्तुत कर सकती है।" उपर्युक्त उदाहरणों सहित कथन का समर्थन कीजिए। **अथवा** (ख) धर्मनिरपेक्षता के पक्ष और विपक्ष में एक-एक तर्क दीजिए। 2

> **उत्तर।** (क) कोई दो :
> · सांस्कृतिक पहचानें बहुत शक्तिशाली होती हैं — वे तीव्र भावनाएँ जगा सकती हैं और बड़ी संख्या में लोगों को लामबंद कर सकती हैं (जैसे भाषा के दंगे, सांप्रदायिक दंगे)।
> · सांस्कृतिक भिन्नताओं के साथ कभी-कभी आर्थिक और सामाजिक विषमताएँ भी होती हैं, जिससे मामला जटिल हो जाता है।
> · जब समूहों के बीच दुर्लभ संसाधन — नदियों का जल (कावेरी विवाद), नौकरियाँ या सरकारी धन — बाँटने पड़ते हैं तो स्थिति और बिगड़ जाती है।
>
> **अथवा**
>
> (ख) **पक्ष में :** धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सभी धर्मों का समान आदर है; राज्य किसी धर्म का पक्ष नहीं

लेता (जैसे सभी धर्मों के त्योहारों पर सार्वजनिक अवकाश), जिससे अल्पसंख्यक बहुसंख्यकों के मूल्यों के प्रभुत्व से सुरक्षित रहते हैं।

विपक्ष में : आलोचकों का तर्क है कि धर्मनिरपेक्षता वोटों के बदले अल्पसंख्यकों का पक्ष लेने का केवल एक बहाना है।

CBSE 2026 · 62/1 "हमारा समुदाय हमें भाषा (मातृभाषा) और सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करता है जिनके माध्यम से हम विश्व को समझते हैं। यह हमारी स्वयं की पहचान को भी सहारा देता है। यह 'हम क्या हैं' इस भाव की द्योतक है, न कि 'हम क्या बन गए हैं।" आप कैसे कह सकते हैं कि सामुदायिक पहचान पूरी तरह जन्म पर आधारित होती है ? 2

उत्तर। सामुदायिक पहचान **प्रदत्त** होती है क्योंकि वह **जन्म और संबद्धता** पर आधारित है, किसी योग्यता या उपलब्धि पर नहीं — जिस परिवार, समुदाय, भाषा या धर्म में हम जन्म लेते हैं उसे हम चुनते नहीं। फिर भी इन समुदायों से संबद्ध होने में लोग गहरी **सुरक्षा और संतोष** की भावना महसूस करते हैं, यद्यपि उनकी सदस्यता पूर्णतः संयोगवश होती है; इसीलिए ऐसी पहचानें इतनी तीव्रता से अनुभव की जाती हैं।

CBSE 2026 · 62/1 (क) अल्पसंख्यक समूहों की धारणा में आमतौर से असुविधा या हानि का कुछ भाव निहित है। उदाहरण देते हुए इस कथन को स्पष्ट कीजिए। **अथवा** (ख) पश्चिमी और भारतीय दोनों संदर्भों में धर्मनिरपेक्षता के अर्थ पर प्रकाश डालिए। 2

उत्तर। (क) अल्पसंख्यक समाज के वे छोटे समूह हैं जो पूर्वाग्रह और भेदभाव के शिकार होते हैं; इससे उनमें प्रबल **समूह-एकजुटता**, साथ होने और संबद्धता की भावना बनती है। हानि आर्थिक ही हो, यह आवश्यक नहीं : **पारसी या सिख** जैसे धार्मिक अल्पसंख्यक आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत संपन्न हो सकते हैं, फिर भी भारी हिंदू बहुसंख्यकों के सामने छोटी संख्या के कारण वे **सांस्कृतिक अर्थ में** वंचित हैं। (विशेषाधिकार-प्राप्त अल्पसंख्यक, जैसे अति धनी, प्रायः अल्पसंख्यक नहीं कहलाते।)

अथवा

(ख) **पश्चिमी अर्थ :** चर्च और राज्य का पृथक्करण — सार्वजनिक जीवन से धर्म का क्रमिक पीछे हटना। **भारतीय अर्थ :** इसमें पश्चिमी अर्थ भी आता है, साथ ही यह भी कि राज्य किसी विशेष धर्म को दूसरों से अधिक वरीयता नहीं देता; वह सभी धर्मों का समान आदर करता है (सर्व धर्म संभाव)।

CBSE 2024 · 62/1 (क) सामुदायिक पहचान की कोई दो विशेषताएँ लिखिए। **अथवा** (ख) भारतीय संदर्भ में 'क्षेत्रवाद' क्या है ? 2

उत्तर। (क) कोई दो : यह **प्रदत्त** होती है — जन्म और संबद्धता पर आधारित, अर्जित योग्यता या उपलब्धि पर नहीं; यह गहरी **सुरक्षा और संतोष** देती है; यह **सार्वभौमिक** है (हर किसी का कोई समुदाय होता है); यह **संयोगवश और बिना शर्त** है — हम चाहें या न चाहें, हम उससे संबद्ध होते हैं।

अथवा

(ख) भारत में क्षेत्रवाद इसकी **भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों की विविधता** में निहित है; यह इन पहचान-चिह्नों के विशेष क्षेत्रों में **भौगोलिक संकेंद्रण** से प्रोत्साहित और **क्षेत्रीय वंचन की भावना** से पोषित होता है (जैसे तेलंगाना, झारखंड की माँगें)।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (5 अंक)

CBSE 2026 · 62/1 "भारतीय राष्ट्रवाद में प्रभावशाली प्रवृत्ति समावेशात्मक और लोकतांत्रिक दृष्टि द्वारा चिह्नित रही।" स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर। · **समावेशी :** इसने भारत की विविधता और बहुलता (धर्म, भाषा, क्षेत्र) को मान्यता दी, न कि एक पहचान थोपने का प्रयास किया।

· **लोकतांत्रिक :** इसने भेदभाव और बहिष्कार को समाप्त करने तथा न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज लाने का प्रयास किया।

· इस दृष्टि ने, मानवतावाद के विचारों के साथ, राष्ट्रवादी नेताओं को **अल्पसंख्यक अधिकारों** और राष्ट्र-निर्माण की रणनीतियाँ बनाने में मार्गदर्शन दिया (जैसे संविधान द्वारा अल्पसंख्यकों को सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों की गारंटी)।

· राष्ट्रवादियों ने माना कि एक सशक्त लोकतांत्रिक राष्ट्र को सभी समूहों, विशेषतः अल्पसंख्यकों, के अधिकारों की रक्षा के लिए विशेष संवैधानिक प्रावधान चाहिए, ताकि बहुसंख्यक उन पर हावी न हो सकें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (6 अंक)

CBSE 2025 · 62/1 नागरिक समाज ने कई महत्त्वपूर्ण पहल करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिनमें सबसे हालिया है सूचना के अधिकार के लिए अभियान। इसकी पहल और इसके परिणाम पर चर्चा कीजिए। 6

उत्तर। पहल :

· इसकी शुरुआत ग्रामीण **राजस्थान** (मज़दूर किसान शक्ति संगठन) में गाँव के विकास पर खर्च हुए सरकारी धन की जानकारी जारी करने की माँग करने वाले आंदोलन से हुई; यह देशव्यापी अभियान बन गया।

· नौकरशाही के प्रतिरोध के बावजूद सरकार को प्रतिक्रिया देनी पड़ी और नागरिकों के सूचना के अधिकार को मान्यता देने वाला कानून पारित करना पड़ा।

परिणाम :

· **सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005**, जो संसद द्वारा 15 जून 2005 को पारित हुआ और 13 अक्तूबर 2005 से लागू है, नागरिकों को सरकारी अभिलेखों तक पहुँच देता है।

· कोई भी व्यक्ति किसी "लोक प्राधिकारी" से जानकारी माँग सकता है, जिसे शीघ्र या **तीस दिन** में उत्तर देना होगा।

· प्रत्येक लोक प्राधिकारी को अपने अभिलेखों का कंप्यूटरीकरण करना होगा ताकि नागरिकों को न्यूनतम औपचारिक अनुरोध करने पड़ें।

· नागरिक दस्तावेज़ों, कार्यों और अभिलेखों का निरीक्षण कर सकते हैं, प्रतियाँ और प्रमाणित नमूने ले सकते हैं, और जानकारी प्रिंट-आउट या इलेक्ट्रॉनिक प्रतियों के रूप में पा सकते हैं — जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही मज़बूत होती है।

CBSE 2024 · 62/1 राष्ट्र एक अनूठे किस्म का समुदाय होता है जिसका वर्णन तो आसान है पर इसे परिभाषित करना कठिन है। ऐसा क्यों ? 6

उत्तर। · हम विशेष राष्ट्रों का सरलता से **वर्णन** कर सकते हैं — जो साझे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक संस्थानों, जैसे साझे धर्म, भाषा, नृजातीयता, इतिहास या क्षेत्रीय संस्कृति पर आधारित होते हैं।

· पर राष्ट्र को **परिभाषित** करना कठिन है, क्योंकि कोई ऐसी विशेषता बताना कठिन है जो प्रत्येक राष्ट्र में अवश्य हो।

· हर संभावित कसौटी के **अपवाद और प्रतिउदाहरण** हैं।

· अनेक राष्ट्रों में एक साझी भाषा, धर्म या नृजातीयता नहीं होती (भारत में स्वयं अनेक हैं)।

· दूसरी ओर, अनेक भाषाएँ, धर्म और नृजातीयताएँ **अनेक राष्ट्रों में** साझा हैं।

· फिर भी इससे, जैसे, सब अंग्रेज़ी-भाषियों या सब बौद्धों का कोई एक राष्ट्र नहीं बन जाता। इसलिए राष्ट्र को सर्वोत्तम रूप से ऐसे समुदाय के रूप में देखा जा सकता है जिसने अपना राज्य पाने में सफलता पाई (या जो उसकी आकांक्षा रखता है) — पहचानना आसान, परिभाषित करना कठिन।

अभ्यास

1. "प्रदत्त" का क्या अर्थ है ?
2. राज्य की वेबर की परिभाषा दीजिए।
3. आत्मसात्करण और एकीकरण में अंतर कीजिए।
4. राज्य-राष्ट्र क्या है ?
5. किसकी मृत्यु से आंध्र प्रदेश बना ?
6. सांप्रदायिकता क्या है ?

7. सत्तावादी राज्य की दो विशेषताएँ बताइए।
8. सूचना का अधिकार अधिनियम कब लागू हुआ ?

उत्तर

उत्तर। 1. जन्म से निर्धारित, चुनी हुई नहीं।
2. वह निकाय जो किसी भू-क्षेत्र में वैध बल-प्रयोग के एकाधिकार का सफलतापूर्वक दावा करता है।
3. आत्मसात्करण प्रभावी संस्कृति अपनाने को बाध्य करता है; एकीकरण अन्य संस्कृतियों को निजी क्षेत्र तक सीमित करता है।
4. ऐसा राज्य जिसमें अनेक "राष्ट्र" बहुविध, पूरक पहचानों के साथ सह-अस्तित्व रखते हैं।
5. पोट्टी श्रीरामुलु (1953)।
6. धर्म से जुड़ी आक्रामक राजनीतिक विचारधारा।
7. लोगों की कोई आवाज़ नहीं; शासक जवाबदेह नहीं; नागरिक स्वतंत्रताएँ सीमित।
8. 13 अक्तूबर 2005।

बहुविकल्पीय प्रश्न : 20 MCQs

1. "विविधता" किस पर बल देती है ?
(a) अधिक्रम (b) विषमताओं (c) अंतरों (d) निर्धनता

2. सामुदायिक पहचान वह है जो हम :
(a) हैं (b) बन गए हैं (c) प्राप्त करते हैं (d) अर्जित करते हैं

3. महत्त्वपूर्ण अन्य लोग वे हैं :
(a) अजनबी (b) प्रसिद्ध हस्तियाँ (c) अधिकारी (d) जो हमारे जीवन में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हैं

4. प्रत्येक पक्ष द्वारा अपने गुणों और दूसरे के दुर्गुणों को बढ़ाकर कहना क्या पैदा करता है ?
(a) सद्भाव (b) उलटे दर्पण-प्रतिबिंब (c) समन्वयवाद (d) आत्मसात्करण

5. "किसी भू-क्षेत्र में वैध बल-प्रयोग का एकाधिकार" किसके लिए राज्य की परिभाषा है ?
(a) दुर्खीम (b) मैक्स वेबर (c) मार्क्स (d) गिडेन्स

6. जर्मैका के अधिक लोग रहते हैं :
(a) जर्मैका में (b) इज़राइल में (c) भारत में (d) जर्मैका के बाहर

7. गैर-राष्ट्रीय संस्कृतियों को निजी क्षेत्र तक सीमित करना है :
(a) एकीकरण (b) संघवाद (c) आत्मसात्करण (d) धर्मनिरपेक्षता

8. 8वीं अनुसूची में भाषाओं की संख्या है :
(a) 14 (b) 18 (c) 22 (d) 20

9. भारत का सर्वोत्तम वर्णन है :
(a) एकीकरणवादी राज्य (b) आत्मसात्करणवादी राज्य (c) धर्मतंत्र (d) राज्य-राष्ट्र

10. राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट 1 नवंबर को किस वर्ष लागू हुई ?
(a) 1953 (b) 1956 (c) 1960 (d) 1966

11. श्रीलंका ने 1956 में किस भाषा को एकमात्र राजभाषा घोषित किया ?
(a) तमिल (b) अंग्रेज़ी (c) सिंहली (d) पाली

12. उत्तरांचल, झारखंड और छत्तीसगढ़ कब बने ?
(a) 2000 (b) 1971 (c) 1990 (d) 1956

13. केंद्र और राज्यों के बीच कर-बँटवारा कौन तय करता है ?
(a) योजना आयोग (b) वित्त आयोग (c) राज्य पुनर्गठन आयोग (d) निर्वाचन आयोग

14. समाजशास्त्रीय अर्थ में अल्पसंख्यक में क्या अवश्य होना चाहिए ?
(a) धन (b) राज्य (c) समूह-एकजुटता और वंचन (d) बहुसंख्यक का दर्जा

15. अल्पसंख्यकों का शैक्षिक संस्थाएँ चलाने का अधिकार किस अनुच्छेद में है ?
(a) 17 (b) 29 (c) 44 (d) 30

16. सांप्रदायिकता मुख्यतः किसके बारे में है ?
(a) राजनीति (b) कर्मकांड (c) दान (d) आस्था

17. समन्वयवादी परंपरा कहाँ दिखती है ?
(a) कबीर की कविता में (b) रंगभेद में (c) आत्मसात्करण में (d) सांप्रदायिक दंगों में

18. सभी धर्मों का समान आदर क्या है ?
(a) धर्मनिरपेक्षता का पश्चिमी अर्थ (b) आत्मसात्करणवादी दृष्टिकोण (c) सांप्रदायिक दृष्टिकोण (d) धर्मनिरपेक्षता का भारतीय अर्थ

19. नागरिक समाज किसके बाहर है ?
(a) केवल परिवार (b) राज्य और बाज़ार (c) केवल बाज़ार (d) राष्ट्र

20. सूचना के अधिकार का अभियान किस ग्रामीण क्षेत्र में शुरू हुआ ?
(a) बिहार (b) केरल (c) राजस्थान (d) गुजरात

1 (c) · 2 (a) · 3 (d) · 4 (b) · 5 (b) · 6 (d) · 7 (a) · 8 (c) · 9 (d) · 10 (b) · 11 (c) · 12 (a) · 13 (b) · 14 (c) · 15 (d) · 16 (a) · 17 (a) · 18 (d) · 19 (b) · 20 (c)

अभिकथन-कारण (6)

(a) A और R दोनों सही हैं, R, A की सही व्याख्या है। (b) दोनों सही हैं, R, A की व्याख्या नहीं है। (c) A सही, R ग़लत। (d) A ग़लत, R सही।

1. A: लोग सामुदायिक पहचान पर ख़तरों की तीव्र प्रतिक्रिया करते हैं। R: संबद्धता संयोगवश, बिना शर्त और लगभग अपरिहार्य है।
2. A: भाषायी राज्यों ने भारतीय एकता को कमज़ोर किया। R: राज्य पुनर्गठन आयोग ने 1956 में भाषायी राज्यों को स्वीकृति दी।
3. A: विविधता का दमन उलटा पड़ सकता है। R: दमन सामुदायिक पहचान को प्रबल कर सकता है।
4. A: बाएँ हाथ वाले लोग समाजशास्त्रीय अल्पसंख्यक हैं। R: अल्पसंख्यकों में सामूहिकता का भाव आवश्यक है।
5. A: सांप्रदायिक व्यक्ति का धर्मपरायण होना आवश्यक है। R: सांप्रदायिक लोग धर्म पर आधारित राजनीतिक पहचान में विश्वास करते हैं।
6. A: नागरिक समाज राज्य पर नज़र रखता है। R: नागरिक समाज संगठन राज्य-नियंत्रित नहीं होते।

उत्तर-कुंजी: 1 (a) · 2 (d) · 3 (a) · 4 (d) · 5 (d) · 6 (a)

- **अंतिम रात का सारांश :** विविधता = अंतर; चुनौती : शक्तिशाली पहचानें, विषमताएँ, विरोध, दुर्लभ संसाधन। सामुदायिक पहचान : समाजीकरण, महत्त्वपूर्ण अन्य लोग; प्रदत्त (हैं, बन नहीं गए); सुरक्षा; संयोगवश, बिना शर्त, अपरिहार्य; सार्वभौमिक; संघर्ष — दर्पण-प्रतिबिंब। राष्ट्र : समुदायों का समुदाय; परिभाषा कठिन (अपवाद); अपना राज्य रखने वाला समुदाय; वेबर का राज्य; सोवियत संघ, जर्मैका, दोहरी नागरिकता।
- राज्य विविधता से डरते हैं : आत्मसात्करण बनाम एकीकरण (यू.एन.डी.पी. 2004 की रणनीतियाँ); दमन उलटा पड़ता है। भारत : 1.21 अरब, 1,632 भाषाएँ, 22 अनुसूचित; दोनों प्रतिमान नहीं; राज्य-राष्ट्र, बहुविध पूरक पहचानें। क्षेत्रवाद : भाषा, संस्कृति, जनजाति, धर्म + संकेंद्रण + वंचन; प्रेसीडेंसियाँ; पोट्टी श्रीरामुलु 1953; राज्य पुनर्गठन आयोग 1956; श्रीलंका, पाकिस्तान; 2000 के राज्य; 28 राज्य, 8 संघ राज्य क्षेत्र; सूचियाँ, राज्यसभा, वित्त आयोग, जी.एस.टी. परिषद्।
- समावेशी और लोकतांत्रिक राष्ट्रवाद (गांधी, टैगोर); अल्पसंख्यक = वंचन + एकजुटता (पारसी, सिख); आंबेडकर; अनुच्छेद 29–30; बॉक्स 6.5 के आँकड़े। सांप्रदायिकता : धर्म पर आक्रामक राजनीतिक विचारधारा; राजनीति, आस्था नहीं; समस्पीकरण; कबीर, भक्ति-सूफ़ी समन्वयवाद। धर्मनिरपेक्षता : पश्चिमी पृथक्करण बनाम भारतीय समान आदर; तुष्टीकरण की बहस। सत्तावादी राज्य; नागरिक समाज (गैर-राज्य, गैर-बाज़ार); सूचना का अधिकार (राजस्थान; 15 जून / 13 अक्तूबर 2005; 30 दिन)।